IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, January 2023
Impact Factor: 6.252

पुराण साहित्य का सामान्य परिचय

कृष्णेन्द्र पाण्डेय[1], डॉ. बी.एन. ओझा[2]

शोधार्थी, शासकीय **टी. आर. एस. महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)[1]**

प्राध्यापक एवं विभागध्यक्ष, श्रीयुत महाविद्यालय गंगेव, रीवा, (म.प्र.)

शोध–सारांशः पुराण, अर्थात् जो पुराना हो। पुराने व्यक्ति का अनुभव विलक्षण होता है और उसके द्वारा रचे गए काव्य या ग्रंथ में उसी के विचार और जीवन व्यतीत किए गए तजुर्बे होते हैं। जीवन में किस तरह उतार–चढ़ाव आते हैं और उनसे कैसे संघर्ष करना है यह सब उस व्यक्ति को पता होता है। जिस व्यक्ति को इतिहास और पुराणों की जानकारी नहीं होती, उससे वेद भी भयभीत होते हैं। कारण यह कि ऐसा व्यक्ति बिना सोचे समझे कार्य करता है और कहीं किसी को भी आहत कर सकता है। अतः हर व्यक्ति को पुराणों का ज्ञान होना चाहिए इतिहास एवं पुराण का आश्रय लेकर ही वेदों का अर्थ विस्तार किया जा सकता है। इसकी सहायता के बिना किसी भी ग्रंथ को व्यापक फलक प्रदान नहीं किया जा सकता, और न ही जन मानस के बीच उसका अभ्युदय ही हो सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

[1]. महाभारत–आदिपर्व, 01/267$\frac{1}{2}$

[2]. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आ. बलदेव उपाध्याय, पृ. 81

[3]. उद्धृत, संस्कृत साहित्य का इतिहास, आ. बलदेव उपाध्याय, पृ. 81

[4]. महाभारत–आदिपर्व–01/16–18

[5]. अर्थर्वेद–11/07/24

[6]. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आ. बलदेव उपाध्याय, पृ. 83

[7]. उद्धृत– संस्कृत साहित्य का इतिहास, आ. बलदेव उपाध्याय, पृ. 86